JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मध्य प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ता सेवाओं पर प्रभाव का मूल्यांकन

हैली थियोफिलस (शोधार्थी)

डॉ. अरुण मोदक (निर्देशक)

सारांश

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) का सम्मिलन विभिन्न क्षेत्रों को बदल दिया है, और शैक्षिक संस्थानों में पुस्तकालय भी इसके प्रभाव से अछूते नहीं रहे हैं। यह शोध पत्र भारत के मध्य प्रदेश में सरकारी विश्वविद्यालयों के संदर्भ में पुस्तकालय सेवाओं और उपयोगकर्ता संतुष्टि को बढ़ाने में आईसीटी एकीकरण के प्रभाव के मूल्यांकन में खुदाई करता है। इस अध्ययन में एक मिश्रित विधि उपयोग किया गया है, जिसमें गुणवत्ता और न्यूनतम अध्ययन विधियों को सम्मिलित किया गया है। गुणवत्ता चरण में, पुस्तकालयाध्यक्ष, संकाय सदस्यों और विश्वविद्यालय प्रशासकों के साथ गहन साक्षात्कारों का आयोजन किया गया है, जिससे पुस्तकालय सेवाओं के प्रभाव के बारे में उनके परिप्रेक्ष्य जान सके। इसके अलावा, छात्रों के साथ ध्यान केंद्रित समूहों को भी आयोजित किया जाएगा ताकि उनके अनुभव और सेवाओं के साथ संतुष्टि के स्तर के बारे में अनुमान प्राप्त किया जा सके। गुणवत्ता चरण में, छात्रों और संकाय सदस्यों के प्रतिनिधि नमूने को एक सुसंगठित सर्वेक्षण दिया जाएगा। सर्वेक्षण विभिन्न पहलुओं को जांचेगा, जैसे कि सूचना पहुंच, संसाधन उपलब्धता, उपयोग की सहजता और समग्र संतुष्टि, जिससे आईसीटी के प्रभाव का उपयोगकर्ता अनुभव की परिमाणिति की जा सके। शोध का उद्देश्य है कि भारतीय सरकारी विश्वविद्यालयों के अंतर्गत पुस्तकालय सेवाओं में आईसीटी के एकीकरण की मजबूतियों और कमियों का पता लगाए। इसके साथ ही, इसके अमलीकरण के दौरान सामने आए चुनौतियों को परिभाषित किया जाएगा और सुधार के लिए संभावित क्षेत्रों की पहचान की जाएगी। अलग-अलग हितधारकों के परिप्रेक्ष्य को समझकर, यह अध्ययन यूजर संतुष्टि को बढ़ाने के लिए पुस्तकालय सेवाओं में आईसीटी उपयोग की प्रभावीता को सुधारने के लिए मूल्यवान सिफारिशें प्रदान करेगा।

कीवर्ड: आईसीटी एकीकरण, पुस्तकालय सेवाएं, उपयोगकर्ता संतुष्टि, सरकारी विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश, शैक्षणिक पुस्तकालय, सूचना पहुंच

१. परिचय

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) की तेजी से बढ़ती हुई प्रगति ने विभिन्न क्षेत्रों में सूचना को पहुंचने, प्रसारित करने और उपयोग करने के तरीकों को क्रांतिकारी रूप से बदल दिया है। इस डिजिटल परिवर्तन के लाभार्थी में शैक्षणिक पुस्तकालय शामिल हैं, जो धरोहर ज्ञान के पारंपरिक संग्रहालय से बदलकर सूचना और शिक्षा के गतिविधियों के जिंदगीशैली के साथ बदल

गए हैं। पुस्तकालय सेवाओं में आईसीटी का एकीकरण ने पहुंच, सुविधा और सुधारे गए उपयोगकर्ता अनुभव के नए युग की शुरुआत की है, जिससे शैक्षणिक अनुसंधान, शिक्षण और शिक्षा प्रक्रियाओं को सुधारने के लिए विशाल अवसर प्रस्तुत हो रहे हैं।

मध्य प्रदेश के सरकारी विश्वविद्यालयों के संदर्भ में, पुस्तकालय सेवाओं में आईसीटी के सम्मिलन का विशेष महत्व है, क्योंकि इन विश्वविद्यालयों में शिक्षा और अनुसंधान के संदर्भ में इनका मुख्य योगदान होता है। छात्र, शिक्षक और शोधकर्ताओं के बौद्धिक विकास और विश्वविद्यालय पर उनके शोध-विद्यार्थी पुरुस्कार को समर्थन प्रदान करने में उनके पुस्तकालयों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

यह शोध पत्र यह मूल्यांकन करने का प्रयास करता है कि मध्य प्रदेश के सरकारी विश्वविद्यालयों में आईसीटी के सम्मिलन के माध्यम से पुस्तकालय सेवाओं को सुधारने में उसकी प्रभावीता का मूल्यांकन कैसे किया जा सकता है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि शैक्षणिक पुस्तकालयों में तकनीक-विद्यायुक्त दृष्टिकोणों के अपनाए जाने का क्या महत्व है और इसके सम्मिलन से उपयोगकर्ता अनुभवों पर इसके प्रभाव क्या है। पुस्तकालयाध्यक्ष, संकाय सदस्य, विश्वविद्यालय प्रशासक और छात्रों सहित विभिन्न हितधारकों के परिप्रेक्ष्य में इस शोध से, यह आईसीटी सम्मिलन के द्वारा प्रदर्शित सामर्थ्यों, चुनौतियों और अवसरों को समझाने का प्रयास करता है।

इस अध्ययन में मिश्रित-विधि शोध दृष्टिकोण को अपनाया गया है, क्योंकि साक्षात्कार और फोकस समूहों से प्राप्त गुणवत्ता अनुभव तथा सर्वेक्षण से प्राप्त सांख्यिकीय डेटा द्वारा विषय का समूल अध्ययन किया जाएगा। शोध विभिन्न पहलुओं की जांच करेगा, जैसे सूचना पहुंच, संसाधन उपलब्धता, उपयोग की सहजता और समग्र उपयोगकर्ता संतुष्टि, जिससे आईसीटी सम्मिलन के प्रभाव का प्रभाव निर्धारित किया जा सके। जैसे ही इस अध्ययन के नतीजे सामने आएंगे, वे शैक्षणिक पुस्तकालयों में आईसीटी के सम्मिलन के विषय पर निरंतर ज्ञान-संपदा को सुधारने में योगदान करेंगे। इसके अलावा, शोध यह यह साबित करने की कोशिश करेगा कि व्यवस्थापकों, नीति निर्माताओं और पुस्तकालयाध्यक्षों को प्रौद्योगिकी का उपयोग पुस्तकालय सेवाओं को उच्च-स्तरीय करने और मध्य प्रदेश के सरकारी विश्वविद्यालयों में समृद्धि के लिए सामर्थ्य के बारे में सूचित निर्णय लेने और रणनीतिक योजनाएँ बनाने में सकारात्मक सिफारिशें प्रदान करेगा।

२. साहित्य संचयन:

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के सम्मिलन ने पुस्तकालय सेवाओं को क्रांतिकारी रूप से परिवर्तित किया है, जिससे उपयोगकर्ताओं के लिए उन्हें और अधिक प्रभावी और पहुंचने योग्य बना दिया गया है। यह साहित्य समीक्षा मध्य प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में आईसीटी के प्रभाव का मूल्यांकन करने का उद्देश्य रखती है। समीक्षा में विभिन्न अध्ययनों, शोध लेखों और रिपोर्टों का पता लगाया जाएगा जो यह जांचते हैं कि आईसीटी ने पुस्तकालय सेवाओं पर कैसा प्रभाव डाला है, जिसमें सूचना पहुंच, संसाधन प्रबंधन, उपयोगकर्ता संतुष्टि और सम्पूर्ण पुस्तकालय की प्रभावशीलता जैसे पहलुओं को शामिल किया जाएगा।

A. जानकारी और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रभाव पर केंद्रित ध्यान

मिस्सेज स्वाति वर्मा (2023) इस अध्ययन में ध्यान दिया गया कि इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय (डीएवीवी) के छात्रों पर जानकारी और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रभाव और उनके संपर्क की परिस्थिति पर। विभिन्न विभागों से 50 प्रतिस्पर्धी (छात्र) को नमूना के रूप में चुना गया। हालांकि, पुस्तकालय, पत्रिकाएं और पूर्वाध्ययन से संबंधित साहित्य की समीक्षा की गई। इस अध्ययन के औजार सवालनामे थे जो आंकड़े पट्टियों के साथ सांख्यिकीय रूप से विश्लेषित किए गए थे, और अनुमानों का मान

अध्यापन करने के लिए उपयोग किया गया था। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कई छात्र यह मानते हैं कि आईसीटी उपकरणों का उपयोग असाधारण रूप से शिक्षा समाप्त करने या किसी भी शैक्षिक काम को पूरा करने के लिए मददगार है। वास्तव में, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के बहुसंख्यक छात्रों का दावा है कि उन्होंने आईसीटी का उपयोग करके कक्षा गतिविधियों को संचालित करने और असाइनमेंट तैयार करने के लिए किया है। इससे छात्र अपने पाठ को अधिक प्रभावी ढंग से आयोजित करते हैं।

B. वर्तमान स्थिति को कब्जे में लेने की कोशिश करने का प्रयास

डॉ. अरुण मोडक (2022) एक व्यापक सर्वेक्षण के परिणामस्वरूप, यह शोध प्रयास करता है कि महाराष्ट्र राज्य विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में जानकारी और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) अनुप्रयोगों और आज के गतिशील उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिजिटल वातावरण को कैद किया गया। एक संरचित सवालनामा और पुस्तकालयाध्याक्षों के साथ आगामी साक्षात्कार का उपयोग करके, हमने यह जाना कि ई-पत्रिकाएं सबसे अधिक उपलब्ध ई-संसाधन हैं और कई पुस्तकालय डिजिटलीकरण गतिविधि में संलग्न हैं, जिसमें डिजिटलीकरण प्रयोगशाला की स्थापना शामिल है। विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के शीर्षक नियमन और प्राप्ति विभागों को पूर्णतः स्वचालित करने की आवश्यकता है ताकि वे संग्रह को बेहतर ढंग से प्रबंधित और नियंत्रित कर सकें।

C. आवेदन या मूल्यांकन की दिशा में केंद्रित

संदीप एस. पटेल (2019) यह शोध अध्ययन भारत के राज्य विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में वेब 2.0 उपकरणों के आवेदन या मूल्यांकन के प्रति केंद्रित है। वर्तमान अध्ययन में भारत के राज्य विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में वेब 2.0 के उपयोग की भर में जांच की गई। इस शोध में सामग्री विश्लेषण का उपयोग किया गया, जिसमें सांख्यिकीय और गुणात्मक आंकड़े हैं जो वेबसाइट अवलोकन और प्रश्नावली विधि से एकत्र किए गए हैं। भारतीय राज्य विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में से 348 पुस्तकालयों में से 69% पुस्तकालयों के पास आधिकारिक वेबसाइट है और 31% पुस्तकालयों के पास कोई विशेषित पुस्तकालय वेबपेज नहीं है। यह अध्ययन भारतीय राज्य विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में वेब 2.0 तकनीकों के आवेदन पर केंद्रित है जिनमें किसी भी प्रकार की वेब 2.0 तकनीकों का उपयोग हुआ है। इसलिए यह अध्ययन राज्य विश्वविद्यालय पुस्तकालयों की वर्तमान परिस्थिति को समझने में मदद करता है जिससे पता चलता है कि भारतीय राज्य विश्वविद्यालय वेब 2.0 एप्लिकेशन के माध्यम से पुस्तकालय सेवाएं प्रदान कर रहे हैं, इस अध्ययन ने इन एप्लिकेशन के प्रभाव का मूल्यांकन नहीं किया है, लेकिन स्वभावशः पुस्तकालय साहित्य खोज से पता चलता है कि ये अनुप्रयोग उपयोगकर्ताओं को जोड़ने और सूचना साक्षरता में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

D.पुस्तकालय स्वचालन की स्थिति का वर्णन

सचिन उमरे (2021) यह शोध लेख उत्तर मध्य प्रदेश राज्य के जबलपुर विभाग में पुस्तकालय स्वचालन की स्थिति का वर्णन करने का प्रयास करता है, विशेष रूप से विश्वविद्यालयों के संदर्भ में। शोधकर्ता कोष स्वचालन की स्थिति का समीक्षात्मक विवरण करने का प्रयास करता है और भविष्य में सुधार के सुझाव के साथ अध्ययन को समाप्त करता है। शोध विद्यार्थी अध्ययन के लिए प्रश्नावली विधि के माध्यम से आंकड़े इकट्ठा करता है। पेपर में स्वचालन और पुस्तकालय-स्वचालन के बारे में भी चर्चा की गई है। उपरोक्त चुनौतियां उद्दीपकों द्वारा ध्यान में रखनी चाहिए, यदि वे सफलता प्राप्त करना चाहते हैं। किसी भी शैक्षणिक पुस्तकालय को स्वचालित करने का प्रयास परीक्षा और त्रुटि के एक की एक के रूप में होना चाहिए और समूहिक रूप से किया जाना चाहिए। अध्ययन ने दिखाया है कि जबलपुर विभाग के विश्वविद्यालयों की पुस्तकालयों में पुस्तकालय स्वचालन प्रगतिशील चरण में है।

E. कोरोनावायरस का अचानक प्रकोप

पूजा पी. दधे (2021) कोरोनावायरस के अचानक प्रकोप और इसके परिणामस्वरूप सावधानीपूर्वक उपायों ने विश्वभर के शिक्षा प्रणालियों को भौतिक शिक्षा-अधिगम प्रक्रिया के विकल्प ढूंढने पर मजबूर किया है। जबकि ऑनलाइन शिक्षा बहुत से तरीके से शायद एक 'छिपा हुआ वरदान' है, इसने विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न चुनौतियों का भी पर्दाफाश किया है जहां लोग उचित बैंडविड्थ और बिना रुकावट विद्युत आपूर्ति प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। अध्ययन में पाया गया है कि इंटरनेट पहुंच बहुत महंगा होने के कारण कम आय वाले परिवारों के बच्चों के लिए यह आम तौर पर मुख्य बाधा थी और उपकरण की स्वामित्व की कमी से छात्रों को घर पर इंटरनेट उपयोग करने से वंचित कर दिया गया। उच्च गति इंटरनेट पहुंच और उपकरण की स्वामित्व की कमी के कारण कुछ छात्र डिजिटल शिक्षा में भाग लेने में संघर्ष करते रहे।

F. बढ़ती हुई जानकारी की पहचान

पुनीत कुमार सिंह (2018) पुस्तकालय अब अपने उपयोगकर्ताओं की बढ़ती हुई जानकारी की आवश्यकताओं की पहचान के साथ अधिक चिंतित हैं और उन्हें नवीनतम जानकारी स्रोत प्रदान करने का प्रयास कर रहे हैं। जानकारी और संचार प्रौद्योगिकियों के प्रकाशने ने शिक्षा के सभी पहलुओं पर बड़ा प्रभाव डाल दिया है, जिसमें शिक्षण और सीखने, संस्थागत प्रबंधन, पुस्तकालय सेवाएं, अनुसंधान और विकास, सूचना प्रसारण, खोज और इसके वितरण के सभी पहलुओं पर बड़ा प्रभाव हुआ है। पुस्तकालय बहुत सारी जानकारी अधिग्रहण कर रहे हैं और इस जानकारी की प्राप्ति के लिए विशाल राशि का खर्च कर रहे हैं, यदि उपयोगकर्ता इस जानकारी का उचित उपयोग नहीं कर पा रहे हैं तो प्रयास और पैसे बेकार जाएंगे। जानकारी साक्षरता में शामिल है कि विशेष समस्या को हल करने या निर्णय लेने के लिए जानकारी को कैसे खोजा जाए, मूल्यांकन कैसे किया जाए और इसे कैसे सकारात्मक रूप से उपयोग किया जाए, चाहे वह जानकारी कंप्यूटर से, पुस्तक से, सरकारी एजेंसी से या किसी अन्य संभावित स्रोत से प्राप्त की जा सकती है। आवश्यक जानकारी को खोजने, पहचानने और उचित रूप से चयन करने की प्रक्रिया अब कठिन हो गई है। जानकारी की भयानक वृद्धि और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और स्रोतों के प्रति पैरादाइम शिफ्ट ने उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को बदल दिया है, साथ ही पुस्तकालयों के जिम्मेदारी को भी।

G. जानकारी का विस्फोट

श्रीमती श्राबोनी दास (2020) जानकारी के विस्फोट के युग में, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) धीरे-धीरे सूचना संग्रह, संग्रहण और पुनःप्राप्ति के पुराने तरीकों को बदल रही है। कॉलेज पुस्तकालय प्रणाली आईटीसी का एक प्रमुख लाभार्थी समूह है। इस अध्ययन का आधार वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि पर है और डेटा को पुरुलिया जिले के छह कॉलेजों से मानक प्रश्नावली के माध्यम से एकत्रित किया गया था। काम यह जांचता है कि जिले के सभी पुस्तकालयों में आईसीटी बुनियादी संरचना इतनी पर्याप्त नहीं है क्योंकि पुस्तकालय के लिए धन आवंटित नहीं किया गया है। पुरुलिया जिले के सरकार सहायित सामान्य स्नातक कॉलेज अब भी पुस्तकालयों में आईटी उपयोग के संबंध में शिशुवस्था की स्थिति में हैं। इन छह पुस्तकालयों में से केवल दोने ने पूर्ण कर दिया था और दोने रेट्रो-कन्वर्जन का काम कर रहे थे जबकि काम विभिन्न चरणों में था। पुस्तकालयों में न तो उचित आईटी प्रशिक्षित मानव-सामग्री थी, और न ही प्राधिकरणों को उन्हें प्रसिद्ध संस्थानों में प्रशिक्षित करने की इच्छा थी।

३. शोध की कमी/ अनुसंधान की खाली जगह

मध्य प्रदेश राज्य में पुस्तकालय स्वचालन की स्थिति और COVID-19 प्रकोप के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के संदर्भ में प्रायोगिकता द्वारा उत्तर देने वाले अध्ययनों के बावजूद, ज्ञात होता है कि पुस्तकालय स्वचालन और डिजिटल शिक्षा के प्रक्रिया में विद्यार्थियों और पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं के लिए सूचना साक्षरता

शिक्षा और समर्थन का सम्मिलन करने के संबंध में साहित्य में एक कमी है। जिन अध्ययनों में उपयोगकर्ताओं के लिए सूचना साक्षरता कौशल को बढ़ाने के लिए पुस्तकालयों द्वारा किए गए प्रयासों के बारे में चर्चा नहीं की गई है, वे जबलपुर विभाजन विश्वविद्यालयों या अन्य शैक्षणिक संस्थानों में पुस्तकालयों द्वारा गतिविधियों को सक्रिय रूप से बढ़ाने और संचालित करने का तरीका नहीं जांचते। सूचित होना कि उपरोक्त अध्ययनों में स्वचालित करने और डिजिटल शिक्षा के मौजूदा चुनौतियों का समाधान करने के लिए पुस्तकालयों और शैक्षणिक संस्थानों द्वारा अधिक उपयुक्त और समावेशी दृष्टिकोन डिजाइन करने में माध्यमिका दिए जाने से लाभ हो सकता है।

४. अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन एक व्यापक साहित्य समीक्षा का उपयोग करता है जिसके माध्यम से मध्य प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रभाव का मूल्यांकन किया जाता है। मुख्य डेटा स्रोत हैं मौजूदा सेकेंडरी डेटा, जिसमें शोध लेख, रिपोर्ट, सम्मेलन पत्रिकाएं, और मध्य प्रदेश के विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में आईसीटी एकीकरण पर ध्यान केंद्रित संस्थागत प्रकाशन शामिल हैं। एक व्यवस्थित सामग्री विश्लेषण का अनुशासनिक सम्पन्न होता है जो सूचना पहुंच, संसाधन प्रबंधन, उपयोगकर्ता व्यवहार, उपयोगकर्ता संतुष्टि, और आईसीटी के प्रायोजन करने के दौरान प्रमुख थीम और रुझानों की पहचान करने के लिए किया जाता है। डेटा संशोधन और व्याख्या से उपयोगकर्ता सेवाओं पर आईसीटी के प्रभाव के बारे में मूल्यवान अंदाज़े प्राप्त होते हैं। नैतिक विचारणा उचित स्रोतों के उद्धरण और आभार की सुनिश्चित करती है। सेकेंडरी डेटा का उपयोग विषयवस्तु का एक सर्वश्रेष्ठ और कारगर अध्ययन करने में मदद करता है, जो निर्धारित संदर्भ में आईसीटी का उपयोगकर्ता सेवाओं पर कैसे प्रभाव डालता है की व्यापक समझने में सहायता करता है।

५. निष्कर्ष

मध्य प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रभाव का मूल्यांकन यह दिखाता है कि आईसीटी एकीकरण द्वारा लाई गई महत्वपूर्ण परिवर्तन। इस अध्ययन की फिंडिंग्स से यह साबित होता है कि आईसीटी ने पुस्तकालय सेवाओं के विभिन्न पहलुओं पर सकारात्मक प्रभाव डाला है, जिसमें सूचना पहुंच, संसाधन प्रबंधन, उपयोगकर्ता व्यवहार, उपयोगकर्ता संतुष्टि, और सेवा कुशलता शामिल हैं। डिजिटल पुस्तकालयों और मोबाइल एप्लिकेशन्स के लागू होने से सूचना पहुंच में विस्तार हुआ है, जिससे उपयोगकर्ताओं को इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का विस्तारित रेंज मिलता है और सुविधा में सुधार होता है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने उपयोगकर्ताओं को जुड़ने और एक जीवंत पुस्तकालय समुदाय को प्रोत्साहित करने में साबित होते हैं। डेटा विश्लेषण ने पुस्तकालय अधिकारियों को डेटा पर आधारित निर्णय लेने में सशक्त किया है, जिससे सेवाओं को उपयोगकर्ता की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनुकूलित किया जा सकता है। इसके अलावा, कोविड-19 महामारी के दौरान आईसीटी के अधिग्रहण ने पुस्तकालयों को ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म और वर्चुअल सहायता के माध्यम से बिना बाधा के सेवाएं प्रदान करने की संभावना बनाई।

हालांकि, इस अध्ययन ने कई क्षेत्रों को भी पहचाना है जिनपर ध्यान दिया जाना चाहिए। विशेष रूप से विकलांग उपयोगकर्ताओं और असंतुलित समुदायों के उपयोगकर्ताओं के लिए आईसीटी सेवाओं की समावेशीता को प्राथमिकता देना चाहिए। इंफ्रास्ट्रक्चर, डिजिटल साक्षरता, और कर्मचारियों के प्रशिक्षण से संबंधित चुनौतियों का सामना करने के लिए जरूरी है ताकि आईसीटी के प्रभावी अनुपालन के लिए सहज और सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो सकें। जैसा कि प्रौद्योगिकी आगे बढ़ती है, तो तेजी से बदलते डिजिटल परिदृश्य में उपयोगकर्ता सेवाओं को अनुकूलित करने के लिए नियमित अनुकूलन और नवाचार आवश्यक हैं।

समापन में, आईसीटी का मध्य प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में उपयोगकर्ता सेवाओं पर प्रभाव साफ दिखता है, जिससे कुशलता, पहुंचने योग्यता, और उपयोगकर्ता अनुभाग में नई दिशा दी गई है। इस अध्ययन से प्राप्त दृष्टांत नीतिवद, पुस्तकालय प्रशासकों, और हितधारकों के लिए मूल्यवान नियोजन बनाने, विविध उपयोगकर्ता आवश्यकताओं को पूरा करने, और आईसीटी के पूरे दम का समर्थन करने के लिए प्रस्तावनाएं प्रदान करता है। यह मध्य प्रदेश के शैक्षिक समुदाय में अध्ययन और अनुसंधान अनुभव को समृद्ध करने और आईसीटी के पूर्ण प्रभाव को अपनाने के लिए एक उपयोगी माध्यम प्रदान करने के लिए मूल्यवान अनुशासन प्रदान करता है।

६. भविष्य का क्षेत्र :

अध्ययन "मध्य प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के प्रभाव का मूल्यांकन" विस्तृत और उम्मीदवार है। चलती रहने वाली प्रौद्योगिकी के कारण, यह जांचना आवश्यक होगा कि आने वाले आईसीटी उपकरण, जैसे कि एकृति बुद्धिमत्ता, वर्चुअल रियलिटी और ऑगमेंटेड रियलिटी, पुस्तकालयों में उपयोगकर्ता सेवाएं और अनुभव को और भी सुधार सकते हैं। इसके अलावा, मध्य प्रदेश के विभिन्न राज्य विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के बीच तुलनात्मक विश्लेषण को संचालित करने से भरमार हो सकते हैं, जिसमें ढांचा, वित्त, और कर्मियों के प्रशिक्षण जैसे कारक ध्यान में रखे जाएंगे। इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं के विचार और प्रतिक्रिया का अध्ययन करने से यह सूचित करता है कि आईसीटी का उपयोग उनके संपूर्ण अनुभव को सुधारने में कैसे मदद कर सकता है, और पुस्तकालयों को उनके सेवाओं को उनके पात्रों की एक्सपेक्टेशन्स और अधिकतम आवश्यकताओं के साथ अधिक प्रभावी ढंग से मिलाने के लिए मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है।

७. संदर्भ :

दास, बी. (2018). तकनीकी ज्ञान के स्रोत और खेती का उत्पादन: एक बड़े स्तर के किसानों के सर्वेक्षण से प्रमाण। कृषि अर्थशास्त्र अनुसंधान समीक्षा, 31(2), 241. https://doi.org/10.5958/0974-0279.2018.00041.1 pdf ict.pdf. (न.द.).

अप्पसाहेब, पी. ए. (2022). डिजिटल शैक्षिक परिवेश का अध्ययन। 11, 2870–2876.

पटेल, एस. एस., & भट्ट, ए. (2019). भारत के विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में वेब 2.0 उपकरणों का अनुप्रयोग। पुस्तकालय दर्शनशास्त्र और प्रयोग, 2019(सितंबर).

उमरे, एस., & अग्रवाल, डी. के. (2021). जबलपुर डिवीजन, मध्य प्रदेश के विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय स्वचालन की स्थिति। अंतरराष्ट्रीय पुस्तकालय विज्ञान में अनुसंधान, 7(2), 78–88. https://doi.org/10.26761/ijrls.7.2.2021.1403

पुस्तकालयाध्यक्ष, पी. पी. डी. ए., & पुस्तकालयाध्यक्ष, जी. डी. के. (2021). COVID -19 महामारी के दौरान ग्रामीण भारत में छात्रों द्वारा ऑनलाइन शिक्षा के लिए तकनीक की उपलब्धता और उपयोग का मूल्यांकन: एक केस स्टडी। पुस्तकालय दर्शनशास्त्र और प्रयोग, 2021(अगस्त), 1–18.

अग्रवाल, ए., & सिंह, पी. के. (2014). भारत में सूचना साक्षरता प्रयास: विशेष संदर्भ में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय पुस्तकालय प्रणाली (भारत): एक अध्ययन। भारतीय सूचना, पुस्तकालय और समाज, 30(2), 83–95. https://doi.org/10.13140/RG.2.2.12283.82721

मलिक, पी., & इलावरसन, पी. वी. (2013). भारत में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी क्षेत्र। एशिया में ग्लोबल आईसीटी इनोवेशन नेटवर्क: बाघों के साथ नृत्य, 3, 21–43। https://doi.org/10.1016/B978-0-85709-470-4.50001-2

कुमार, आर., & कुमार, पी. (2018). हरियाणा, भारत में किसानों के बीच सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रभाव का पुनर्विचार। आरएनआई नंबर यूपीबीआईएल, 3(3), 70–75।